छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर द्वारा निर्मित प्रश्न बैंक

2023-24

कक्षा 12

हिंदी

अनुक्रमणिका

क्र.	खण्ड	पृ. क्र.
1	खण्ड (अ) अपठित गद्यांश, अपठित काव्यांश	3
2	खण्ड (ख) कार्यालयीन हिन्दी और रचनात्मक लेखन	19
3	वितान	62

खण्ड (अ)

प्रश्न 1 निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे हुए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

12 अंक

दुःख के वर्ग में जो स्थान भय का है वही स्थान आनंद वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुःखी और कभी–कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म–सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह से कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ–साथ कर्म में प्रवृत्ति होने के आनंद का योग रहता है। साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म–सौंदर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

जिन कर्मों में किसी प्रकार कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है उन सबके प्रति उत्कंठापूर्ण आनंद उत्साह के अंतर्गत लिया जाता है । कष्ट या हानि के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य मीमांसकों ने इसी दृष्टि से युद्ध–वीर, दान–वीर, दया–वीर इत्यादि भेद किए हैं। इनमें सबसे प्राचीन और प्रधान युद्धवीरता है, जिसमें आघात, पीड़ा क्या मृत्यु तक की परवाह नहीं रहती। इसी प्रकार की वीरता का प्रयोजन अत्यंत प्राचीन काल से पड़ता चला आ रहा है, जिसमें साहस और प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर पहुँचते हैं। केवल कष्ट या पीड़ा सहन करने से साहस में ही उत्साह का स्वरूप स्फुरित नहीं होता। उसके साथ आनंदपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कंठा का योग चाहिए। बिना बेहोश हुए भारी फोड़ा चिराने को तैयार होना साहस कहा जाएगा, पर उत्साह नहीं। इसी प्रकार चुपचाप, बिना हाथ पैर हिलाए, घोर प्रहार सहने के लिए तैयार रहना साहस और कठिन से कठिन प्रहार सहकर भी जगह से न हटना वीरता कही जाएगी। ऐसे साहस और वीरता को उत्साह के अंतर्गत तभी ले सकते हैं जब कि साहसी या वीर उस काम को आनंद के साथ करता चला जाएगा जिसके कारण उसे इतने प्रहार सहने पड़ते हैं । सारांश यह है कि आनंदपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कंठा में ही उत्साह का

दर्शन होता है, केवल कष्ट सहने के निश्चेष्ट साहस में नहीं। वृत्ति और साहस दोनों का उत्साह के बीच संचरण होता है।

दानवीर और अर्थ त्याग का साहस अर्थात उसके कारण होने वाले कष्ट या कठिनता को सहने की क्षमता अंतर्निहित रहती है। दानवीरता तभी कही जाएगी जब दान के कारण दानी को अपने जीवन निर्वाह में किसी प्रकार का कष्ट या कठिनता दिखाई देगी। इस कष्ट या कठिनता की मात्रा या संभावना जितनी ही अधिक होगी, दानवीरता उतनी ही ऊँची समझी जाएगी, पर इस अर्थ त्याग के साहस के साथ ही जब तक पूर्ण तत्परता और आनंद के चिह्न न दिखाई पड़ेंगे तब तक उत्साह का स्वरूप न खड़ा होगा।

1. साहित्य मीमांसकों के अनुसार वीरता के कितने प्रकार है?
2. उत्साह और साहस में अंतर लिखिए।
3. उत्साह के दर्शन कहाँ होते हैं?
4. उत्साह के बीच किनका संचरण होता है?
5. दानवीर किसे कहते हैं?
6. उत्साह के भेदों में सबसे प्राचीन किसे माना जाता है?
7. उत्साह किसे कहते हैं?

2. निराला जी के त्याग की कहानियाँ तो अनंत है. उनकी डायरी लिखी जा सकती है। मतवाला प्रति शनिवार को निकलता था। उस दिन प्रातःकाल को कई बंगाली स्नातक युवक अपनी साइकिल लेकर पहुँच जाते थे। वे प्रति सप्ताह अखबार बेचकर अपना कमीशन ले लेते थे। मतवाला की काफी धूम और धाक् थी। गरीब छात्रों को उसकी बिक्री से पर्याप्त सहायता मिल जाती थी। एक दिन एक अत्यन्त दीन मलीन छात्र से निराला जी हाल चाल पूछने लगे। उसे फटे हाल देख ऐसे द्रवित हुए कि डेढ़ सौ रूपये की नई साइकिल तो खरीद ही दी, उसके लिए डबल सूट भी बनवा दिया और कहा कि स्वावलंबन का सहारा मत छोड़ो तथा पुस्तकें खरीदने के लिए पैसे मुझसे लेते जाओ।

मतवाला कार्यालय का दरबान गोरखपुर बस्ती की ओर का रहने वाला एक नौजवान था। वह निराला जी को गुरू जी कहा करता था। उसकी शादी तय हुई, तब निराला जी

ने रेशमी साड़ी, मखमली कुर्ती, सोने की इयर रिंग (कर्णाभूषण) इत्र–फुलेल आदि खरीदकर दस रूपये नेवते के साथ भेज दिया। यह काम उन्होंने बिल्कुल गुपचुप किया। उनकी कमाई के अधिकांश पैसे मौन भाव से परोपकार में ही खर्च होते। सुहृद–संघ (मुजफ्फरपुर) के वार्षिकोत्सव से लखनऊ लौटते समय मुझसे मिलने के लिए बीच में छपरा उतरे, तो रिक्शे वाले की फटी गंजी देख उससे हाल–चाल पूछने लगे और एक नई गंजी तथा एक नया अंगोछा खरीदकर अपने सामने ही फटी गंजी निकलवाई और नई पहनाई। वह बेचारा रोता हुए उनके चरणों में लोटने लगा।

निराला जी, वास्तव में निराला ही थे। अंगूर का गुच्छा या मीठे खजूर की पुड़िया किसी भिखारी के हाथ में देते समय हँसकर कह भी देते थे कि इसे मेरे सामने चखकर देखो तो कैसा है? एक दिन एक कंगले को लाल सेब देकर उसे सीख देने लगे कि इसे तू खाएगा तो तेरा चेहरा ऐसा ही सुर्ख हो जाएगा, जिस पर उसने दीनतापूर्वक हँसकर कहा कि एक दिन आप की मर्जी से यह खाने को मिल ही गया तो क्या इतने से ही मेरे सूखे बदन में खून आ जाएगा, मालिक। यह सुनकर निराला जी ने सेठ जी से कहा कि इसे दो रूपये दे दीजिए, यह और भी खरीद कर खायेगा। सेठ जी ने भी बिना हिचक वैसा ही किया फिर जब मुंशी जी ने ठहाके के साथ यह कह दिया कि इतने पैसे से भी नया खून लाने भर सेब नहीं खा सकता, तब अपनी जेब से झट निकाल कर एक रूपया फिर दिया।

निराला जी संसार से ऐसे निस्संग रहे कि जीवन भर फक्कड़शाह बने रहे। उनके पास न अपना कोई संदूक था, न ताला कुंजी थी। कपड़े लत्ते और रूपये पैसे की मोह ममता तो थी ही नहीं। अपनी धुन में मस्त रहने से फुरसत ही कहाँ थी। रूपये पैसे का हिसाब किताब रखने का अभ्यास ही नहीं था। तकिए के नीचे नंबरी नोट पड़े रहते, पर इन नोटों को उनके पास पड़े रहने का अवकाश कहाँ मिलता था। पूरे चौबीस घंटे तक उनके पास जो द्रव्य ठहर जाए, उसका अहोभाग्य।

निराला जी की ये कहानियाँ आज के युग में उपन्यास की मनगढ़ंत बातें भले ही समझी जाए, पर आज जो निराला जी पूजा प्रतिष्ठा हो रही है, उससे उनकी साधना, स्वतः सिद्ध हो रही है। पुण्यबल के बिना कीर्ति प्रसार कदापि नहीं होता। निस्पृह त्याग से

बढ़कर कोई पुण्य भी नहीं। व्यास वचनानुसार परोपकाराय पुण्याय तभी मनुष्य कर पाता है जब उसकी प्रकृति में त्याग वृत्ति की प्रधानता रहती है।

1. निराला जी के त्याग की कहानियाँ कितनी हैं?
2. निराला जी की किस पत्रिका की धूम थी?
3. निराला जी अपनी कमाई का अधिकांश भाग किस पर खर्चकर देते थे?
4. निराला जी जीवन भर कैसे बने रहे थे?
5. निराला जी के स्वभाव में किस वृत्ति की प्रधानता थी?
6. सुहृद में किस उपसर्ग का प्रयोग है?
7. ताला –कुंजी में कौन सा समास है?

3. कवियों, शायरों तथा आम आदमी को सम्मोहित करने वाला पलाश आज संकट में है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि अगर इसी पलाश का विनाश जारी रहा तो यह ढाक के तीन पात वाली कहावत में ही बचेगा। अरावली और सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं में जब पलाश वृक्ष चैत (वसंत) में फूलता था तो लगता था कि वन में आग लग गई हो अथवा अग्निदेव फूलों के रूप में खिल उठे हों।

पलाश पर एक–दो दिन में ही संकट नहीं आ गया है। पिछले तीस चालीस वर्षों में दोना पत्तल बनाने वालों, कारखाने बढ़ने, गाँव–गाँव में चकबंदी होने तथा वन माफियाओं द्वारा अंधाधुंध कटान कराने के कारण उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि प्रांतों में पलाश के वन घटकर दस प्रतिशत से भी कम रह गए हैं। वैज्ञानिकों ने पलाश वनों को बचाने के लिए ऊतक संवर्धन (टिशू कल्चर) द्वारा परखनली में पलाश के पौधों को विकसित कर एक अभियान चलाकर पलाश वन रोपने की योजना प्रस्तुत की है। हरियाणा तथा पुणे में ऐसी दो प्रयोगशालाएँ भी खोली हैं।

एक समय था जब बंगाल का पलाशी का मैदान, अरावली की पर्वत–मालाएँ टेसू के फूलों के लिए दुनिया भर में मशहूर थीं। विदेशों से लोग पलाश के रक्तिम वर्ण के फूल देखने आते थे। महाकवि पद्माकर का छंद–कहै पद्माकर परागन में, पौन हूँ में, पानन में, पिक में, पलासन पगंत है। लिखकर पलाश की महिमा बखान की थी. ब्रज, अवधी, बुंदेलखंडी, राजस्थानी, हरियाणवी, पंजाबी, लोकगीतों में पलाश के गुण गाए गए हैं। कबीर

ने तो खांखर भया पलाश– कहकर पलाश की तुलना एक ऐसे सुंदर सजीले नवुयवक से की है, जो अपनी जवानी में सबको आकर्षित कर लेता है किन्तु बुढ़ापे में अकेला रह जाता है. वसंत व ग्रीष्म ऋतु में जब तक टेसू में फूल व हरे भरे पत्ते रहते हैं, उसे सभी निहारते हैं किंतु शेष आठ महीने वह पतझड़ का शिकार होकर झाड़ झंखाड़ की तरह रह जाता है।

पर्यावरण के लिए प्लास्टिक पालीथीन की थैलियों पर रोक लगने के बाद पलाश की उपयोगिता महसूस की गई जिसके पत्ते, दोना, थैले, पत्तल, थाली, गिलास सहित न जाने कितने काम में उपयोग में आ सकते हैं। पिछले तीस चालीस साल में नब्बे प्रतिशत वन नष्ट कर डाले गए। बिन पानी के बंजर, ऊसर तक में उग आने वाले इस पेड़ की नई पीढ़ी तैयार नहीं हुई। यदि यही स्थिति रही और समाज जागरूक न हुआ तो पलाश विलुप्त वृक्ष हो जाएगा।

प्रश्न–

1. अरावली और सतपुड़ा में पलाश के वृक्ष कैसे लगते थे?
2. कबीर ने पलास की तुलना किससे की है?
3. पलाश के वृक्षों को बचाने के लिए क्या किया जा रहा है?
4. किन लोकगीतों मे पलाश का वर्णन किया गया है?
5. पलाश की उपयोगिता कब अनुभव की गई?
6. रक्तिम का अर्थ लिखिए।
7. पलाश के वृक्ष कम क्यों रह गए हैं?

4. भारत के संविधान में सभी को उन्नति के बराबर अवसर देने की बात कही गई है। बाद में आपातकाल में संविधान में समाजवाद लाने की बात भी जोड़ी गई। समाजवाद की बात को फिलहाल भूल भी जाएं तो भी समान अवसर की बात तो भूली नहीं जा सकती जिस पर देश के संविधान निर्माताओं ने अपनी मोहर लगाई थी लेकिन इस समय जो राजनीतिक और आर्थिक माहौल है उसमें संविधान की इस बुनियादी बात को लोग भूले हुए हैं और उन्हें आज कोई इसकी याद दिलाने वाला भी नहीं है। अतः विश्व बैंक या कोई और संस्था अगर आर्थिक असमानता बढ़ने की बात करती है तो इसे इस तरह दरकिनार कर दिया जाता है, जैसे यह बात कही ही नहीं गई हो या गलती से कह दी गई हो। वैसे यह सच भी है कि विश्व बैंक या अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष जैसी संस्थाओं को किसी भी देश में आर्थिक

असमानता बढ़ने की वास्तविक चिंता नहीं है। ऐसी बातें अक्सर क्षेपक या प्रसंग के रूप में ही आती है। इस देश में अभी भी लगभग चालीस करोड़ लोग ऐसे हैं जो गरीबी की हालत में जी रहे हैं। यानी जिनके पास खाने–कपड़े, रहने का कोई पुख्ता इंतजाम नहीं है। भारत में आज सत्तर हजार से ज्यादा परिवार ऐसे जरूर हो गए हैं जिनके पास दस लाख रूपये से ज्यादा की दौलत है लेकिन इसी के साथ यह भी एक सच्चाई है कि आज औसत भारतीय परिवार 1991 के मुकाबले साल में सौ किलोग्राम अनाज कम खा रहा है। आंकड़ों के अनुसार 2002–03 में प्रति व्यक्ति अनाज की खपत उस समय से भी कम रही, जब आजादी से पहले बंगाल में भीषण अकाल पड़ा था। इस सच्चाई से भी हम वाकिफ हैं कि यही भारत जो विश्व अर्थव्यवस्था को चुनौती देता बताया जाता है, संयुक्त राष्ट्र मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार 124 वें स्थान से भी पिछड़कर 127 वें स्थान पर चला गया है। यहाँ पिछले दस वर्षों में बाल मृत्यु दर में गिरावट इतनी धीमी रही है कि आज बांग्लादेश भी जो हमसे इस मामले में पीछे रहा करता था, आगे बढ़ चुका है। भारत विश्व के उन कुछ देशों में से हैं जहाँ बच्चों के पोषण का स्तर सबसे अधिक गिरा हुआ है। इस मामले में भारत की बदनामी इतनी ज्यादा है कि उसकी तुलना अफ्रीका के कुछ बेहद ही गरीब देशों से की जाती है। कुल मिलाकर हम एक ऐसे देश के निवासी बनते जा रहे हैं जिसमें अर्थव्यवस्था तो प्रगति कर रही है मगर लोग पिछड़ते जा रहे हैं जबकि दिलचस्प यह है कि इंदिरा गांधी के जमाने में जब अर्थव्यवस्था की गति तेज नहीं थी, जब अर्थव्यवस्था आज के मुहावरों में जंजीरों में जकड़ी हुई थी तब लोग ज्यादा तेजी से प्रगति कर रहे थे। आज थोड़ी सी जगमगाहट ने घने अंधेरे को इस तरह ढँक दिया है कि अच्छे अच्छों को अंधेरे का आभास तक नहीं होता। वास्तव में आर्थिक असमानता, सामाजिक असमानता को भी बरकरार रखने में मदद करती है क्योंकि आर्थिक समानता ही वह पहली सीढ़ी है जो कि व्यक्ति को सामाजिक समानता की ओर ले जा सकती है । इसके बगैर सामाजिक असमानता मिटाने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता लेकिन हमारे यहाँ पिछले वर्षों में सामाजिक असमानता को खत्म करने के आधे–अधूरे राजनीतिक प्रयास ही हुए हैं। इसलिए इसका बहुत असर हमारे आर्थिक ढाँचे पर नहीं पड़ा है। इसी का असर है कि आज लगभग सर्वसम्मति से यह मान लिया गया है कि बिहार जैसे राज्य का कुछ नहीं किया जा सकता और वहाँ जो आज स्थिति है उसे खुद भी ठीक नहीं कर सकता यानी वहाँ की सरकार पर भी यह नैतिक दायित्व अब नहीं रहा कि वह बिहार को फिर से आर्थिक और

सामाजिक रूप से खड़ा करे। अगर वह मात्र इतना भी कर लेती है कि जो स्थिति इस समय वहाँ है उसे और बिगड़ने न दे तो इससे भी हमारे देश का आला वर्ग प्रसन्न हो जाएगा और इसे भी एक उपलब्धि माना जाएगा।

1. आपातकाल में हमारे संविधान में किस बात को जोड़ा गया ?
2. विश्व बैंक या अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष को किसकी चिंता नहीं है?
3. भारत की गरीबी की तुलना किससे की जाती है?
4. आर्थिक असमानता किसे मदद कर रही है?
5. वर्तमान में लोग क्या भूले हुए हैं?
6. संयुक्त राष्ट्र मानव विकास रिपोर्ट में भारत किस स्थान पर है?
7. विश्व–बैंक में कौन सा समास है?

5. साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल निडर, बिल्कुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं? जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस–पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है। साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, पर वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, जिंदगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता।

जिंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम को झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिये जोखिम का हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अंततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और जिंदगी का कोई मजा उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में असल में, उसने जिंदगी को ही आने से रोक रखा है।

जिंदगी से अंत में हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूंजी लगाते हैं। पूंजी लगाना जिंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलटकर पढ़ना है जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं।

1. साहस की जिंदगी जीने वालों में ऐसी कौन–सी विशेषताएँ है, जिनके कारण उन्हें अन्य लोगों से अलग किया जा सकता है?
2. जिंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है – कैसे? स्पष्ट कीजिए।
3. कैसा आदमी सुखी नहीं हो सकता और क्यों?
4. जीवन में साहस क्यों अपेक्षित है?
5. गद्यांश में क्या संदेश दिया गया है? संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए ।
6. उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए–सकुशल, व्यावहारिक।
7. विशेषण बनाइए– साहस।

प्रश्न 2 निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए – 4

अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे।

गीत गाकर मैं जगाने आ रहा हूँ।

अतल अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा,

अरूण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।

कल्पना में आज तक उड़ते रहे तुम,

साधना से सिहरकर मुड़ते रहे तुम।

अब तुम्हें आकाश में उड़ने न दूँगा,

आज धरती पर बसाने आ रहा हूँ।

सुख नहीं यह, नींद में सपने संजोना,

दुख नहीं यह, शीश पर गुरू भार ढोना।

शूल तुम जिसको समझते थे अभी तक,

फूल मैं उसको बनाने आ रहा हूँ।

देखकर मंझधार को घबरा न जाना,

हाथ ले पतवार को घबरा न जाना।

मैं किनारे पर तुम्हें थकने न दूँगा,

पार मैं तुमको लगाने आ रहा हूँ।

तोड़ दो मन में कसी सब शृंखलाएँ,

तोड़ दो मन में बसी संकीर्णताएँ।

बिन्दु बनकर मैं तुम्हें ढलने न दूँगा,

सिंधु बन तुमको उठाने आ रहा हूँ।

तुम उठो, धरती उठे, नभ शिर उठाए,

तुम चलो गति में नई गति झनझनाए।

विपथ होकर मैं तुम्हें मुड़ने न दूँगा,

प्रगति के पथ पर बढ़ाने आ रहा हूँ।

प्रश्न (1) कवि किन्हें और किस प्रकार जगाना चाहता है?

(2) शूल और फूल से कवि का क्या आशय है?

(3) कवि ने मन की किस भावना को त्यागने पर बल दिया है?

(5) "पार मैं तुमको लगाने आ रहा हूँ" का क्या आशय है?

2. वह खून कहो किस मतलब का

जिसमें उबाल का नाम नहीं।

वह खून कहो किस मतलब का,

आ सके देश के काम नहीं।

वह खून कहो किस मतलब का,

जिसमें जीवन, न रवानी है।

जो परवश होकर बहता है,

वह खून नहीं है, पानी है।

उस दिन लोगों ने सही–सही,

खून की कीमत पहचानी थी

जिस दिन सुभाष ने बर्मा में,

मांगी उनसे कुरबानी थी।

बोले, स्वतंत्रता की खातिर

बलिदान तुम्हें करना होगा।

तुम बहुत जी चुके हो जग में,

लेकिन आगे मरना होगा।

आजादी के चरणों में जो,

जयमाल चढ़ाई जाएगी।

वह सुनो, तुम्हारे शीशों के,

फूलों से गूँथी जाएगी।

आजादी का संग्राम कहीं,

पैसे पर खेला जाता है?

यह शीश कटाने का सौदा,

नंगे सर झेला जाता है।

आजादी का इतिहास कहीं,

काली स्याही लिख पाती है?

इसके लिखने के लिए,

खून की नदी बहाई जाती है।

यूँ कहते–कहते वक्ता की,

आँखो में खून उतर आया।

मुख रक्त वर्ण हो दमक उठा,

दमकी उनकी रक्तिम काया।

आजानु बाहु ऊँची करके,

वे बोले, रक्त मुझे देना।

इसके बदले में भारत की,

आजादी तुम मुझसे लेना।

हो गई सभा में उथल पुथल,

सीने में दिल न समाते थे।

स्वर इंकलाब के नारों के,

कोसों तक छाए जाते थे।

हम देंगे –देंगे खून,

शब्द बस यही सुनाई देते थे।

रण में जाने को युवक खड़े

तैयार दिखाई देते थे।

बोले सुभाष इस तरह नहीं,

बातों से मतलब सरता है।

लो, यह कागज है कौन यहाँ,

आकर हस्ताक्षर करता है?

इसको भरने वाले जन को,

सर्वस्व समर्पण करना है।

अपना तन–मन–धन–जन जीवन,

माता को अर्पण करना है।

पर यह साधारण पत्र नहीं,

आजादी का परवाना है।

इस पर तुमको अपने तन का,

कुछ उज्ज्वल रक्त गिराना है।

प्रश्न. (1) इंकलाब का क्या अर्थ है?

(2) कैसा खून पानी के समान है?

(3) वक्ता की आँखों में क्या कहते हुए खून उतर आया?

(4) सुभाष चन्द्र बोस ने कहाँ और किसके लिए कुर्बानी माँगी थी?

3. चिड़िया को लाख समझाओ,

कि पिंजड़े के बाहर,

धरती बहुत बड़ी है निर्मम है,

वहाँ हवा में उन्हें,

अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।

यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,

पर पानी के लिए भटकना है,

यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।

बाहर दाने का टोटा है,

यहाँ चुग्गा मोटा है।

बाहर बहेलिए का डर है,

यहाँ निर्द्वन्द्व कंठ–स्वर है।

फिर भी चिड़िया

मुक्ति का गाना गाएगी,

मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी,

पिंजड़े से जितना अंग निकाल सकेगी, निकालेगी,

हरसूँ जोर लगाएगी

और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

(1) पिंजड़े के बाहर की दुनिया निर्मम क्यों है?

(2) पिंजड़े में बंद चिड़िया को पिंजड़े के अंदर क्या सुविधाएँ उपलब्ध है?

(3) कवि ने चिड़िया द्वारा बाहर जाकर पानी के लिये भटकने की बात क्यों कही है?

(4) इस कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है?

4. कुछ भी बन, बस कायर मत बन।

ठोकर मार, पटक मत माथा,

तेरी राह रोकते पाहन !

कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

ले दे कर जीना, क्या जीना?

कब तक गम के आँसू पीना?

मानवता ने सींचा तुझको,

बहा युगों तक खून–पसीना।

कुछ न करेगा? किया करेगा–

रे मनुष्य– बस कातर क्रंदन ?

कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

युद्ध देहि, कहे जब पामर,

दे न दुहाई पीठ फेरकर

या तो जीत प्रीति के बल पर,

या तेरा पथ चूमे तस्कर !

प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है,

पर कायरता अधिक अपावन !

कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

तेरी रक्षा का न मोल है,

पर तेरा मानव अमोल है !

यह मिटता है, वह बनता है !

यही सत्य की सही तोल है

अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,

कर न दुष्ट को आत्म समर्पण !

कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

प्रश्न (1) कवि किसे ठोकर मारने की बात कहता है?

(2) कवि कैसे जीवन को जीवन नहीं मानता ?

(3) कवि की दृष्टि में सत्य का सही मापदंड क्या है?

(4) कायरता प्रतिहिंसा से भी अपावन कैसे है?

5. संकटों से वीर घबराते नहीं,

आपदाएँ देख छिप जाते नहीं।

लग गए जिस काम में, पूरा किया,

काम करके व्यर्थ पछताते नहीं।

हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता,

कर्मवीरों को न इससे वास्ता।

बढ़ चले तो अंत तक ही बढ़ चले,

कठिनतर गिरिशृंग ऊपर चढ़ चले।

कठिन पंथ को देख मुस्काते सदा,

संकटों के बीच वे गाते सदा।

है असंभव कुछ नहीं उनके लिए,

सरल संभव कर दिखाते वे सदा।

यह असंभव कायरों का शब्द है,

कहा था नेपोलियन ने एक दिन।

सच बताऊं, जिंदगी ही व्यर्थ है,

दर्प बिन, उत्साह बिन और शक्ति बिन।

प्रश्न (1) कविता में वीरों की जिन विशेषताओं पर बल दिया गया, उनमें दो प्रमुख विशेषताएँ क्या–क्या हैं?

(2) कर्मवीरों को किस बात से कोई लेना–देना नहीं होता और क्यों?

(3) किन विशेषताओं के बिना जीवन व्यर्थ है और क्यों?

(4) गिरिश्रृंग शब्द का आशय स्पष्ट कीजिए।

CGBSE

खण्ड (ख) कार्यालयीन हिन्दी और रचनात्मक लेखन

3. निबंध लेखन (रचनात्मक लेखन) अंक –5

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखिए–

1. बढ़ती जनसंख्या, संसाधनों पर बोझ।
2. पुस्तकों का महत्व।
3. विज्ञापनों से घिरा हमारा जीवन।
4. इंटरनेट : लाभ और हानियाँ
5. परिश्रम सफलता की कुंजी है।
6. पहला सुख निरोगी काया।
7. सफलता का दूसरा नाम परिश्रम।
8. भारतीय वेश–भूषा पर पाश्चात्य प्रभाव।
9. स्वस्थ जीवन सुखद जीवन।
10. मोबाईल फोन–वरदान या अभिशाप
11. काल करै सो आज कर
12. संपर्क भाषा हिन्दी
13. कटते जंगल बढ़ता प्रदूषण
14. क्या नहीं कर सकती नारी।
15. प्राकृतिक आपदाएँ और हमारी वैज्ञानिक प्रगति।
16. धन संग्रह की बढ़ती प्रवृत्ति।
17. साहसी अपने सपने उधार नहीं लेता।
18. किसी पर्यटन स्थल का वर्णन।
19. मेरा प्रिय कवि।
20. मेरे सपनों का भारत।
21. कोरोना महामारी, शिक्षा में प्रभाव।
22. वन रहेंगे, हम रहेंगे।
23. भारत का सपना – चन्द्रयान
24. G-20 2023

4. कार्यालयीन पत्र–

1. मलेरिया के बढ़ते प्रकोप पर चिंता व्यक्त करते हुए स्वास्थ्य मंत्री को पत्र लिखिए।
2. नगर निगम अधिकारी को अपने क्षेत्र के पेयजल की समस्या हेतु पत्र लिखिए।
3. सड़क चौड़ीकरण के नाम पर वृक्षों की अंधाधुंध कटाई कर हरियाली को नुकसान पहुँचाया जा रहा है। ध्यानाकर्षण करते हुए दैनिक पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए।
4. नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर उनसे अपने मोहल्ले की सफाई कराने का अनुरोध कीजिए।
5. प्लास्टिक थैलियों के बढ़ते प्रयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए पर्यावरण मंत्री को एक पत्र लिखिए।
6. बैंक से चेक बुक मंगाने हेतु प्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया को पत्र लिखिए।
7. अपने प्राचार्य को विषय परिवर्तन के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।
8. अपने प्राचार्य को एक पत्र लिखिए जिसमें आपके सहपाठियों ने कोरोना महामारी के समय लॉकडाउन में प्रशंसनीय कार्य किए हैं। जिनके लिए उन्हें सम्मानित करने का अनुरोध हो।
9. सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध नियम के उल्लंघन को लेकर अपने राज्य के पर्यावरण मंत्री को पत्र लिखिए ।
10. कोरोना महामारी के चौथे चरण को ध्यान में रखते हुए नागरिकों को जागरूक करने हेतु दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

5. विभिन्न माध्यमों के लिए पत्रकारीय लेखन और उसके विविध आयाम अंक – 4

1. पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?
2. पत्रकारिता के विविध आयाम के नाम लिखिए (कोई 2)
3. पत्रकारिता के कोईतीन प्रकारों के नाम लिखिए।
4. खोजपरक पत्रकारिता क्या है?
5. पीत पत्रकारिता (पेज थ्री) किसे कहते हैं?
6. एडवोकेसी पत्रकारिता का उद्देश्य क्या है?
7. वैकल्पिक पत्रकारिता क्या है?

8. पत्रकारिता की भाषा में मुखड़ा किसे कहते हैं?
9. फोटो पत्रकारिता का तात्पर्य क्या है?
10. कार्टून कोना का महत्व लिखिए।
11. रेखांकन और कार्टोग्राफ का प्रयोग किस समाचार के लिए होता है?
12. समाचार पत्र में संपादकीय की क्या भूमिका होती है?

6.कविता– कहानी– नाटक की रचना प्रकिया पर आधारित प्रश्न (विकल्प सहित)

अंक 3

(नाटक)

1. नाटक किसे कहते हैं? कोई दो नाटक का नाम लिखिए।
2. नाटक में समय का बंधन का महत्व लिखिए।
3. नाट्यशास्त्र में वाचिक अर्थात बोले जाने वाले शब्द नाटक का शरीर कहा गया है स्पष्ट कीजिए।
4. नाटक में शिल्प (कथ्य) की क्या भूमिका होती है स्पष्ट कीजिए।
5. संवाद की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।
6. नाटक के तत्वों के नाम लिखिए।
7. एक घरेलू महिला एवं रिक्शा चालक को ध्यान में रखते हुए तीन तीन संवाद लिखिए।
8. नाटक में संकलन त्रय किसे कहते हैं। लिखिए।
9. संवाद चाहे कितने भी तत्सम और क्लिस्ट भाषा में क्यों न लिखे गए हों। स्थिति और परिवेश की माँग के अनुसार यदि वे स्वाभाविक जान पड़ते हैं तो उनके दर्शक तक संप्रेषित होने में कोई मुश्किल नहीं है, क्या आप इससे सहमत है? पक्ष या विपक्ष में तर्क दें।

(कविता)

1. कविता क्या है ? कैसे बनती है,लिखिए ।
2. कविता में शब्दों का चयन कैसे किया जाता है लिखिए ।
3. कविता के तत्व कौन–कौन से है लिखिए।
4. कविता में बिंब किसे कहते हैं उदाहरण लिखिए।
5. कविता के घटक कौन–कौन से हैं?
6. कविता समय विशेष की उपज होती है कैसे?
7. साहस विषय पर मुक्तक लिखिए। (4 पंक्ति)
8. कविता की अनजानी दुनिया का सबसे पहला उपकरण है – 'शब्द', समझाइये ।
9. कहानी और नाटक में कोई तीन अंतर लिखिए ।

(कहानी)

1. कहानी किसे कहते हैं? किन्ही दो कहानी कार का नाम लिखिए।
2. कहानी के तत्वों के नाम लिखिए।
3. कहानी का केन्द्रीय बिन्दु क्या होता है स्पष्ट कीजिए।
4. कहानी की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।
5. संवाद की कहानी में क्या भूमिका होती है?
6. मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं वह उसका निर्माता नियंत्रणकर्ता और स्वामी होता है, पर लघु कथा लिखिए।
7. चरित्र प्रधान कहानी की कोई तीन विशेषतएँ लिखिए।
8. मुंशी प्रेमचंद की कोई तीन कहानी के नाम लिखिए।
9. रवि समाचार सुनकर बहुत परेशान हो गया पता चला कि उनके माता–पिता को कोरोना हुआ है अब कैसे जाए उन तक लॉक डाउन लगा हुआ है...। कहानी पूरी कीजिए।

7. समाचार लेखन (उल्टा पिरामिड शैली) फीचर लेखन– आलेख, (विकल्प सहित)

(समाचार लेखन)

1. समाचार के तत्वों पर प्रकाश डालिए।
2. समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं समझाइये ।
3. समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली क्या है?
4. समाचार लेखन में छः ककारों का क्या महत्व है?
5. समाचार लेखन के कितने अंग (अवयव) होते हैं लिखिए।
6. उल्टा पिरामिड शैली को सचित्र समझाइये।

(फीचर)

1. शिक्षा का बदलता चेहरा।
2. मोबाईल सुविधा या असुविधा।
3. आज के दूषित खान–पान को रेखांकित करते हुए एक फीचर लिखिए।
4. मँहगी शिक्षा।
5. मेरा आदर्श।
6. मिटते रीति रिवाज।
7. गांव नहीं रहे गाँव।
8. उधार संस्कृति।
9. एकल परिवार।
10. बदल रहा मेरा गाँव।
11. कहाँ गए वे दिन।
12. ऑनलाईन शिक्षा।
13. युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति।

(आलेख)

1. बदलती जीवन शैली।
2. आँखों देखी घटना।
3. इंटरनेट पर शिक्षा।
4. मोबाइल गेम।
5. वर्तमान जीवन संघर्ष।
6. गाँव में शहरीकरण।
7. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव।
8. विवाह में धनिकता का दिखावा।
9. हताशा में आशा।
10. मेरा गांव मेरी पहिचान।

प्रश्न.1 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए– (6)

1. मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ
जो मुझको बाहर हँसा रूलाती भीतर
मैं हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ।

प्रश्न. (1) कवि के अवसाद का क्या कारण है?
(2) कवि बाहर से क्यों हँसते हैं?
(3) कवि किसकी याद ले कर घूमते हैं?

2. मैं निज–रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

प्रश्न. (1) कवि की शीतल वाणी में आग कैसे उत्पन्न होती है?
(2) भूपों के प्रासाद किस पर न्यौछावर है?
(3) कवि ने खंडहर की दुनिया किसे कहा है?

3. हो जाये न पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं–
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी–जल्दी चलता है।
दिन जल्दी–जल्दी ढलता है।

प्रश्न (1) कवि ने पथिक की किस चाहत का वर्णन किया है?
(2) कविता में पथिक की क्या हालत हो गई है?
(3) पथिक को किस बात की आशंका है?

4. सबसे तेज बौछारें गयी भादो गया तब से हुआ सबेरा हुआ
खरगोश की आँखो जैसा लाल सवेरा
शरद आया, पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए
घंटी बजाते हुए जोर जोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुण्ड को
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके।

प्रश्न. 1. शरद ऋतु का प्रातःकाल कैसा है ?
2. बच्चे क्यों उत्साहित हैं ?
3. बच्चों को इशारे करके कौन बुला रहा है ?

5. कविता एक खेल है बच्चों के बहाने
बाहर भीतर
यह घर, वह घर
सब घर एक कर देने के माने
बच्चा ही जाने

प्रश्न. 1. कविता को खेल क्यों कहा गया है?

2. कविता और खेल में क्या समानता है?

3. सब घर एक कर देने के माने से क्या आशय है?

6 सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना,
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह।

प्रश्न. 1. बात किस तरह बेतरह कसती चली गई?

2. तमाशबीनों से कवि का क्या तात्पर्य है?

3. कवि ने भाषा की तुलना किससे की है और क्यों?

7. आप और वह दोनों
(कैमरा बस करो)
नहीं हुआ, रहने दो
(परदे पर वक्त की कीमत है)
अब मुस्कुरायेंगे हम
आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)
धन्यवाद,

प्रश्न. 1. 'परदे पर वक्त की कीमत है' से क्या आशय है?

2. दूरदर्शन वाले क्यों मुस्कुराये?

3. कार्यक्रम की सफलता में थोड़ी सी कसर क्या रह गई?

8. इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है।
नहीं सहा जाता है।
ममता के बादल की मंडराती कोमलता
भीतर पिराती है।
कमजोर और अक्षम अब हो गई है आत्मा यह
छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है।
बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है।

प्रश्न. 1 कवि किससे परिवेष्टित आच्छादित है?
2. कवि को क्या सहा नहीं जाता है?
3. कवि को किस बात का डर है?

9. सचमुच मुझे दण्ड दो कि हो जाऊँ
पाताली अंधेरे की गुहाओ में विवरो में
धुएँ के बादलों में
बिलकुल मैं लापता
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है।
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
या मेरा जो होता–सा लगता है, होता–सा संभव है
सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है, कार्यों का वैभव
अब तक तो जिंदगी में जो कुछ था, जो कुछ है
सहर्ष स्वीकारा है
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

प्रश्न. 1. कवि किसका अहसान मंद है और क्यों?
2. कवि कहाँ लापता हो जाना चाहता है?
3. कवि का हर परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार करने का क्या कारण है?

10. प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नाम
राख से लीपा हुआ चौका (अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक, मल दी हो किसी ने

प्रश्न. 1 चौका क्या है? चौका अभी गीला पड़ा है कैसे?
2. आकाश के लाल रंग की तुलना किस–किस प्रकार से की गई है?
3. कविता का नाम एवं कवि का नाम लिखिए ।

11. तिरती है समीर–सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया–
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया–
यह तेरी रण–तरी
भरी आकांक्षाओं से,
धन, भेरी–गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल !

प्रश्न. 1 अस्थिर सुख पर दुख की छाया से कवि का क्या आशय है?
2. विप्लव के बादल का क्या अर्थ है?
3. समीर सागर से कवि का क्या आशय है? इसमें कौन तैर रहा है?

12. रूद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष
अंगना–अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर कांप रहे हैं।
धनी वज्र गर्जन से बादल।
त्रस्त नयन मुख ढांप रहे हैं।

जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर।
चूस लिया है उसका सार
हाड़ मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार !

प्रश्न. 1. पूँजीपतियों ने किसानों की कैसी दुर्दशा कर डाली है?
2. कृषक वर्ग विप्लव के बादलों का आह्वान क्यो ंकरता है?
3. बादलों की गर्जना से पूंजीपतियों की कैसी अवस्था हो जाती है?

13. खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस
कहैं एक एकन सो ''कहाँ जाई का करी?''
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत
साँकरे सबै पै, राम! रावरे कृपा करी।
दारिद –दसानन दबाइ दुनी, दीनबंधु
दुरित –दहन देखि तुलसी हहा करी।।

प्रश्न. 1. जीविका विहीन लोगों की मनःस्थिति कैसी है?
2. कवि ने दसानन किसे कहा है? और क्यों?
3. कवि के अनुसार अकाल के कारण समाज की कैसी अवस्था है?

14. निज जननी के एक कुमारा। तात! तासु तुम्ह प्रान अधारा।।
सौंपेसि मोहि तुम्हहिं गहि पानी। सब विधि सुखद परमहित जानि।।
उतरू काह दैहऊँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई।।
बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन।
उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपाल देखाई।।

प्रश्न. 1. राम की विलाप दशा कैसी हो गई?
2. अखंड कौन है, किसने, किससे कहा?
3. सोच बिमोचन का क्या अर्थ है?

15. तुरत बैद तब कीन्ह उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।।
हृदय लाइ प्रभु भेटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।
कपि पुनि वैद्य तहाँ पहुँचावा। जेहि विधि तबहिं ताहि लइ आवा।।
यह वृत्तांत दसानन सुनेऊ। अति बिवाद पुनि–पुनि सिर धुनेऊ।
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा।।

प्रश्न. 1. वैद्य कौन था? उनके साथ राम की सेना ने कैस आचरण किया?
2. किस घटना का वृत्तांत दसानन ने सुना?उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई?
3. लक्ष्मण कैसे स्वस्थ हुए? उनके स्वस्थ होने पर क्या हुआ?

16. आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों में झुलाती है उसे गोद–भरी
रह–रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी

प्रश्न 1. चाँद का टुकड़ा किसे संबोधित किया गया है? क्यों?
2. गोद–भरी का क्या तात्पर्य है?
3. हवा में बच्चे की हँसी किस प्रकार गूँज उठती है?

17. फितरत का कायम है तवाजुन आलमे –हुस्ना–इश्क में भी
उसको उतना ही पाते हैं खुद को जितना खो ले हैं।
आबो–ताब अश्आर न पूछो तुम भी आँखें रक्खो हो
ये जगमग बैतों की दमक है या हम मोती रो ले हैं।

प्रश्न. 1. कवि के अनुसार प्रेम को पाने का क्या उपाय है?
2. कवि के शेरों में किसकी चमक है?
3. मोती रो ले है से क्या तात्पर्य है?

18. झूमने लगे फल, रस अलौकिक
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की, कटाई अनंतता की
लूटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का।
छोटा मेरा खेत चौकोना।

प्रश्न. 1. रस अलौकिक किसान और कवि के संदर्भ में क्या है?

2. अक्षय पात्र किसे और क्यों कहा गया है?

3. अमृत धाराएँ किसान और कवि के संदर्भ में क्या है?

19. हौले–हौले जाती मुझे बाँध निज माया से
उसे कोई तनिक रोक रक्खो
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखे
नभ में पाँती–बँधी बगुलों की पाँखें।

प्रश्न. 1. कवि किस माया में बँध गया है?

2. काले बादलों के बीच दृश्य कैसा प्रतीत हो रहा है?

3. आँखे चुराने से कवि का क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 2 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सौदंर्य बोध संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (4)

1. मैं स्नेह सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

प्रश्न. (1) काव्यांश की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।

(2) उक्त पंक्तियों का भाव–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

2. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना– बना कितने जग रोज मिटाता
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !

प्रश्न 1. काव्यांश में निहित भाव–सौन्दर्य को अपने शब्दों में लिखिए ।

2. काव्यांश का शिल्प–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

3. हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं–
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी–जल्दी चलता है !
दिन जल्दी–जल्दी ढलता है।
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे–
यह ध्यान परो में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !
दिन जल्दी–जल्दी ढलता है।

प्रश्न. 1 काव्यांश की रचना किस छंद में हुई है?

2. काव्यांश में किन चित्रों द्वारा मार्मिकता उत्पन्न होती है?

3. प्रस्तुत कविता में कवि ने किस मनोवैज्ञानिक सत्य को उजागर किया है?

4, दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज उड़ सके
दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके–
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके–
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया

प्रश्न. –

1. दिए गए काव्यांश में अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए?
2. तितलियों की नाजुक दुनिया से कवि का क्या आशय है?
3. काव्यांश में छंद पहचानिए।

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने बाहर
बारह–भीतर इस घर उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने?

प्रश्न. 1. उपर्युक्त काव्यांश के भाषा–सौंदर्य पर प्रकाश डालिए?

2. काव्यांश का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

3. कविता में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए?

5. नभ में पाँती– बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जाती वे मेरी आँखे,
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

प्रश्न. 1. काव्यांश के शिल्पगत–सौन्दर्य को लिखिए।
2. काव्यांश के भाव–सौन्दर्य को बताइये?
3. प्रयुक्त अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए।

6. उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज है?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा, देता है?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा)
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या है
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा।

प्रश्न. 1. इस काव्यांश में प्रयुक्त छंद का नाम लिखिए ?
2. काव्यांश की भाषा शैली की विशेषताएँ बताइये ?
3. कवि ने अपनी कविता में मानवीय संवेदनाओं को उकेरा है? समझाइये।

7. जिन्दगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है,
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल–पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है–
संवेदन तुम्हारा है।

प्रश्न. 1. काव्यांश के भाव–सौदंर्य को लिखिए।

2. गरबीली गरीबी में निहित सौदर्य को स्पष्ट कीजिए।

3. भीतर की सरिता के भाव सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

8 जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात–भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है।

प्रश्न. 1. काव्यांश का काव्य–सौंन्दर्य बताइये।

2. काव्यांश को किन–किन अलंकारों से सजाया गया है?

3. झरना या मीठे पानी का स्रोत उपमानों का अर्थ बताइये।

.9 नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो
और...
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

प्रश्न. 1. काव्यांश में किस भाषा–शैली का प्रयोग किया गया है?

2. काव्यांश में अलंकारों के सौंदर्य पर प्रकाश डालिए ?

10 फिर –फिर
बार– बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन–सुन घोर वज्र हूंकार।

अशनि–पात से शापित उन्नत शत–शत वीर,
क्षत–विक्षत हत अचल –शरीर,
गगन–स्पर्शी स्पर्धा धीर।
हँसते है छोटे पौधे लघुभार–
शस्य अपार,
हिल–हिल
खिल–खिल
हाथ हिलाते,
तुझे बुलाते,
विप्लव –रव से छोटे ही है शोभा पाते।

प्रश्न. 1. काव्यांश के शिल्प–सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।
2. काव्यांश मे प्रतीक व्यंजना पर प्रकाश डालिए ।
3. काव्यांश में तत्सम शब्दों को बताइये ?

11. अट्टालिका नहीं है रे
आतंक –भवन
सदा पंक पर ही होता
जल– विप्लव –प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग–शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।

प्रश्न 1. काव्यांश के शिल्प–सौन्दर्य को लिखिए।
2. काव्यांश में अलंकार–योजना बताइये?
3. काव्यांश में प्रतीक–योजना बताइये ?

12 तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहऊँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत।।
भरत बाहु बलसील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवन कुमार।।

प्रश्न. 1. काव्यांश के भाव–सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए ?
2. काव्यांश के शिल्प–सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए ?
3. काव्यांश में किस छंद का प्रयोग है?

13 प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर।
आई गयउ हनुमान, जिमि करूना मँह वीर रस।।

प्रश्न. 1. काव्यांश के काव्य–सौन्दर्य लिखिए ।
2. काव्यांश में किस छंद का प्रयोग है।
3. काव्यांश के भाव स्पष्ट कीजिए।

14 सुनि दसकंधर बचन तब कुंभकरन बिलखान।
जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान।।

प्रश्न. 1. काव्यांश का भाव–सौन्दर्य को बताइये?
2. काव्यांश के काव्य–सौष्ठव को लिखिए ।
3. काव्यांश मे प्रयोग छंद का नाम बताइये।

15 नहला के छलके–छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंधी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुंह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े।

प्रश्न. 1. रुबाई का भाव–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।
2. रूबाई छंद की परिभाषा लिखिए।
3. प्रयुक्त रस का नाम बताइये ।

16 आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने मे ंचाँद उतर आया है।

प्रश्न 1. काव्यांश का भाव–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।
2. प्रयुक्त छंद एवं भाषा की विशेषता बताइये ?
3. काव्याशं के कवि व शीर्षक का नाम लिखिए।

17 नौरस गुंचे पंखड़ियों की नाजुक गिरहें खोले हैं
या उड़ जाने को रंगो बू गुलशन में पर तोले हैं
तारे आँखे झपकावें है जर्रा–जर्रा सोये हैं।
तुम भी सुनो हो यारो। शब में सन्नाटे कुछ बोले हैं।

प्रश्न. 1 काव्यांश का भाव–सौन्दर्य अपने शब्दों में लिखिए।
2. प्रयुक्त उर्दू शब्दों को लिखिए।
3. प्रयुक्त रस कौन सा है?

18 छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

प्रश्न. 1. काव्यांश का भाव–सौन्दर्य प्रकट कीजिए।
2. काव्यांश के शिल्पगत–सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

19 कल्पना के रसायनों को पी,
बीज गल गया निःशेष,
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव–पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

प्रश्न. 1. काव्यांश के भाव–सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
2. काव्यांश की अलंकार योजना बताइये।
3. काव्यांश के काव्य–सौन्दर्य को लिखिए।

(कविताओं की विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न) अंक 6

1. दिन जल्दी–जल्दी ढलता है कविता में बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?
2. "आत्म परिचय " कविता एक ओर जग जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ– विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?
3. "जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास–कपास" के बारे में सोंचे कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है?
4. "पतंगों के साथ–साथ वे भी उड़ रहे हैं"– बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है?
5. भाषा को सहूलियत से बरतने से क्या अभिप्राय है?
6. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किन्तु कभी –कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है कैसे? लिखिए।
7. "परदे पर वक्त की कीमत है" कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है?
8. "उषा" कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है।
9. "अस्थिर सुख पर दुःख की छाया" पंक्ति में दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों?
10. शोक ग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करूण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है? लिखिए ।
11. छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?
12. "छोटा मेरा खेत" कविता में रचना के संदर्भमें अंधड़ और बीज क्या है लिखिए ?
13. "बगुलों के पंख" कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
14. शायर फ़िराक गोरखपुरी राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहते है लिखिए।

बजार दर्शन

जैनेन्द्र कुमार

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण के प्रश्न– 6 अंक

1. बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर चलता है, वैसे ही इस जादू की मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूं , वह भी लूं। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को जरूर सेंक मिल जाता है पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है. जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी?

प्रश्न. 1. बाजार के जादू की जकड़ से बचने का क्या उपाय लेखक ने बताया है?

2. बाजार की कृतार्थता का क्या तात्पर्य है?

3. बाजार का जादू कब कब चलता है?

2. पड़ोस में एक महानुभाव रहते हैं जिनको लोग भगत जी कहते हैं। चूरन बेचते हैं। यह काम करते, जाने उन्हें कितने बरस हो गए हैं? लेकिन किसी एक भी दिन चूरन से उन्होंने छः आने पैसे से ज्यादा नहीं कमाए। चूरन उनका आस पास सरनाम है। और खुद खूब लोकप्रिय है। कहीं व्यवसाय का गुर पकड़ लेते और उस पर चलते तो आज खुशहाल क्या मालामाल होते। क्या कुछ उनके पास न होता। इधर दस वर्षों से मैं देख रहा हूँ, उनका चूरन हाथों हाथ बिक जाता है। पर वह न उसे थोक देते हैं न व्यापारियों को बेचते हैं। पेशगी आर्डर कोई नहीं लेते। बँधे वक्त पर अपनी चूरन की पेटी लेकर घर से ही बाहर हुए नहीं कि देखते देखते

छह आने की कमाई उनकी हो जाती है। भगत जी बाकी चूरन बालकों को मुफ्त बाँट देते हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ है कि कोई उन्हें पच्चीसवां पैसा भी दे सके। कभी चूरन में लापरवाही नहीं हुई है, और कभी रोग होता भी मैंने उन्हें नहीं देखा है।

प्रश्न. 1. भगत जी मालामाल क्यों नहीं हुए?

2. भगत जी अपना चूरन किस प्रकार बेचते थे ?

3. क्या कारण है कि भगत जी छः आने तक का ही चूरन बेचते थे?

3. बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी पर्चेजिंग पावर के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी। इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक दूसरे को ठगने की घात में हों। एक ही हानि में दूसरे का अपना लाभ दीखता है और वह बाजार का, बल्कि इतिहास को सत्य माना जाता है ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान– प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होने लगता है तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना है और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है, जो उसका शास्त्र बना हुआ है, वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा है वह मायावी शास्त्र है , वह अर्थशास्त्र अनीति शास्त्र है।

प्रश्न. 1. बाजार की सार्थकता कब होती है?

2. बाजार का बाजारूपन कौन लोग बढाते हैं?

3. पर्चेजिंग पावर के गर्व में लोग बाजार को क्या देते हैं?

विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न 1 अंक

अति लघु उत्तरीय

1. बाजार का जादू चढ़ने पर मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. बाजार का जादू उतरने पर मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
3. बाजारूपन से क्या तात्पर्य है?
4. जेब भरी हो और मन खाली हो, तब क्या होता है?
5. जेब खाली हो और मन भरा न हो तब क्या होत है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(प्रत्येक 3 अंक)

प्रश्न. 1. बाजार दर्शन पाठ के आधार पर पैसे की व्यंग्य शक्ति को स्पष्ट कीजिए।

2. बाजार दर्शन के विद्वान पाठक से चूरन बेचने वाले भगत जी श्रेष्ठ है। अपना विचार स्पष्ट कीजिए।
3. बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, वह देखता है सिर्फ क्रय शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इसमें कहाँ तक सहमत हैं?
4. किस कारण व्यक्ति कोरे गाहक व बेचक बन जाते हैं?
5. फैंसी चीजों के विषय में लेखक का क्या मानना है?

काले मेघा पानी दे

धर्मवीर भारती

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण के प्रश्न 6 अंक

1. उन लोगों के दो नाम थे– इंदर सेना या मेढ़क मंडली। बिल्कुल एक दूसरे के विपरीत। जो लोग उनके नग्न स्वरूप, शरीर उनकी उछल कूद, उनके शोर शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ कांदों से चिढ़ते थे, वे उन्हें कहते थे मेढक मंडली। उनकी अगवानी गालियों से होती थी। वे होते थे दस बारह बरस से सोलह अठारह बरस के लड़के सांवला रंग नंगा बदन सिर्फ एक जाँघिया या कभी कभी लंगोटी। एक जगह इकट्ठे होते थे। पहला जयकारा लगता था, बोल गंगा मैया की जय। जयकारा सुनते ही लोग सावधान हो जाते थे। स्त्रियाँ और लड़कियाँ छज्जे बारजे से झाँकने लगती थी और यह विचित्र नंग धड़ंग टोली उछलती कूदती समवेत पुकार लगाती थी।

प्रश्न. 1. मेढ़क मंडली की वेशभूषा कैसी थी?

2. मेढ़क मंडली की जयकारा सुनते ही लोगों पर क्या प्रतिक्रिया होती थी?

3. मेढ़क मंडली का काम क्या था?

2. बिना त्याग के दान नहीं होता। अगर तेरे पास लाखों करोड़ों रूपये है और उसमें से तू दो चार रूपये किसी को दे दे तो यह क्या त्याग हुआ। त्याग तो वह होता है कि जो चीज तेरे पास भी कम है जिसकी तुझको भी जरूरत है तो अपनी जरूरत पीछे रखकर दूसरे के कल्याण के लिए उसे दे तो त्याग तो वह होता है, दान तो वह होता है, उसी का फल मिलता है।

प्रश्न. 1. जीजी ने त्याग और दान को कैसे समझाया?

2. किस प्रकार का दान उत्तम है और कौन सा नहीं?

3. किस दान का फल प्रभावी होता है?

3. जब जीजी बाल्टी भर कर पानी ले गई उनके बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे, हाथ काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुँह फुलाए खड़ा रहा। शाम को उन्होंने लड्डू मठरी खाने को दी तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया। मुँह फेरकर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं.। पहले वे भी तमतमाई, लेकिन ज्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रहा गया। पास आकर मेरा सर अपनी गोद में लेकर बोली, देख भइया रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इन्द्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे? मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोली। तू इसे पानी की बरबादी समझता है पर यह बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्ध्य चढ़ाते हैं, जो चीज मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे? इसीलिए ऋषि मुनियों ने दान को सबसे ऊंचा स्थान दिया है।

प्रश्न. 1. लेखक ने किसे और किस काम के लिए साफ इंकार कर दिया?

2. लेखक का मुँह क्यों फूला हुआ था?

3. पानी फेके जाने के संदर्भ में जीजी ने क्या तर्क दिए?

विषय वस्तु पर आधारित (अतिलघु उत्तरीय प्रश्न) प्रत्येक 1 अंक

प्रश्न 1. इन्दर सेना कौन–सी जयकारा लगाती थी?

2. मेढ़क–मंडली में लड़कों की उम्र क्या थी?

3 गुड़धानी कैसे बनाई जाती है?

4. काले मेघा पानी दे पाठ के आधार पर ऋषि मुनियों ने दान को कौन सा स्थान दिया है?

5. कुमार सभा मे लेखक क्या काम करते थे ?

लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3 अंक)

1. "काले मेघा पानी दे" पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

2. पानी दे गुड़धानी दे मेघों से पानी के साथ–साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है?

3. इंदर सेना पर पानी फेंकने के बारे में जीजी और लेखक के विचारों की तुलना कीजिए?

4. "गगरी फूटी बैल पियासा" से लेखक का क्या आशय है?

5. वर्तमान समय में जलसंकट गहराता जा रहा है अतः जल संकटसे बचने हेतु उपाय बताइये?

6. लोगों ने लड़कों की टोली को मेढ़क–मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी?

CGBSE

पहलवान की ढोलक

(फणीश्वर नाथ रेणु)

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहणके प्रश्न 6 अंक

1. जाड़े का दिन। अमावस्या की रात–ठंडी और काली। मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव भयार्त शिशु की तरह थर–थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बाँस–फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य। अंधेरा और निस्तब्धता।

   अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करूण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय मे ंही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हंस पड़ते थे।

   सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज कभी कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज, हरे राम हे भगवान, की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी।

प्रश्न. 1. "अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

2. गाँव थर–थर कांप रहा था क्यों?

3. रात्रि की निस्तब्धता कैसे भंग हो जाती थी?

2. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्धमृत, औषधि, उपचार पथ्य विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े बच्चे जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही

ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न ही महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूंदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

प्रश्न. 1. रात्रि की विभीषिका को गाँव में कौन चुनौती देता था?

2. ढोलक की आवाज का गाँव के निवासियों पर क्या प्रभाव पड़ता था?

3. ढोलक की आवाज क्या करने में समर्थ नहीं थी?

3. शांत दर्शकों की भीड़ में खलबली मच गई पागल है पागल, मरा –ऐं। मरा–मरा पर वाह रे बहादुर। लुट्टन बड़ी सफाई से आक्रमण को संभालकर, निकलकर उठ खड़ा हुआ और पैंतरा दिखाने लगा। राजा साहब ने कुश्ती बंद करवाकर लुट्टन को अपने पास बुलवाया और समझाया। अंत में उसकी हिम्मत की प्रशंसा करते हुए दस रूपये का नोट देकर कहने लगे–जाओ, मेला देखकर घर जाओ।

नहीं सरकार लड़ेंगे –– हुकुम हो सरकार।

प्रश्न. 1. शांत भीड़ में खलबली मचने के बाद दर्शकों ने क्या सोचा ?

2. राजा साहब ने लुट्टन को अपने पास क्यों बुलवाया ?

3. राजा साहब ने लुट्टन को दस रूपये का नोट क्यों दिया?

विषयवस्तु पर आधारित प्रश्न (प्रत्येक 1 अंक)

अति लघु उत्तरीय प्रभन

1. लुट्टन के अनुसार उसका गुरू कौन है?
2. चाँद सिंह कौन था?
3. 'शेर के बच्चे' की उपधि किसे दी गई थी?
4. "धिना धिना, धिक धिना" का क्या अर्थ है?

लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3 अंक)

1. कहानी के किस किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या–क्या परिवर्तन हुए?
2. गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटे के देहान्त के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?
3. ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर पड़ा?
4. महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?
5. राजा साहब ने लुट्टन को क्यों पुरस्कृत किया ?

CGBSE

एक कम

विष्णु खरे

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण के प्रश्न (6)

1. यदि यह वर्ष चैप्लिन की जन्मशती का न होता तो भी चैप्लिन के जीवन का एक महत्वपूर्ण वर्ष होता क्योंकि आज उनकी पहली फिल्म "मेकिंग ए लिविंग" के 75 वर्ष पूरे होते हैं। पौन शताब्दी से चैप्लिन की कला दुनिया के सामने है और पाँच पीढ़ियों को मुग्ध कर चुकी है। समय, भूगोल और संस्कृतियों की सीमाओं से खिलवाड़ करता हुआ चार्ली आज भारत के लाखों बच्चों को हँसा रहा है जो उसे अपने बुढ़ापे तक याद रखेंगे। पश्चिम में तो बार–बार चार्ली का पुनर्जीवन होता ही है, विकासशील दुनिया में जैसे जैसे टेलीविजन और वीडियो का प्रसार हो रहा है, एक बहुत बड़ा दर्शक वर्ग नए सिरे से चार्ली को घड़ी 'सुधारते' या 'जूते खाने' की कोशिश करते हुए देख रहा है। चैप्लिन की ऐसी कुछ फिल्में या इस्तेमाल न की गई रीले भी मिली है जिनके बारे में कोई जानता न था। अभी चैप्लिन पर करीब 50 वर्षों तक काफी कुछ कहा जाएगा।

प्रश्न. 1. क्या कारण है कि विकासशील देशों में चार्ली लोकप्रिय हो रहे हैं?

2. चार्ली की पहचान दुनिया के सामने किस प्रकार है?

3. चार्ली को लोग कब तक याद कर पाएंगे?

2. भारतीय कला और सौन्दर्य शास्त्र को कई रसों का पता है, उनमें से कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ–साथ पाया जाना श्रेयष्कर माना गया है, जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं यह संसार की सारी सांस्कृतिक परम्पराओं को मालूम है, लेकिन करूणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे रस सिद्धांत की माँग करता है जो भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता। रामायण तथा महाभारत में जो हास्य है वह दूसरों पर है और अधिकांशतः वह परसंताप से प्रेरित है। जो करूणा है वह अक्सर सद्व्यक्तियों के लिए और कभी कभार दुष्टों के लिए है। संस्कृत नाटकों में जो विदूषक है वह राज व्यक्तियों से कुछ बदतमीजियाँ अवश्य करता है, किन्तु करूणा और हास्य का सामंजस्य उसमें भी नहीं है।

अपने ऊपर हँसने और दूसरों में भी वैसा ही माद्दा पैदा करने की शक्ति भारतीय विदूषक में कुछ कम ही नजर आती है।

प्रश्न. 1. कौन–सी ऐसी बात है जो भारतीय परम्परा में नहीं पाई जाती है?

2. संसार की सारी सांस्कृतिक परंपराओं को क्या मालूम है?

3. लेखक भारतीय विदूषकों में किस प्रकार की कमी देखता है?

3. अपने जीवन के अधिकांश हिस्सों में हम चार्ली के टिली ही होते हैं जिसके रोमांस हमेशा पंक्चर होते रहते हैं। हमारे महानतम क्षणों में कोई भी हमें चिढ़ाकर या लात मारकर भाग सकता है। अपने चरमतम शूरवीर क्षणों में हम क्लैव्य और पलायन के शिकार हो सकते हैं। कभी–कभार लाचार होते हुए जीत भी सकते हैं। मूलतः हम सब चार्ली है क्योंकि हम सुपरमैन नहीं हो सकते। सत्ता, शक्ति, बुद्धिमता, प्रेम और पैसे के चरमोत्कर्षों में जब हम आइना देखते हैं तो चेहरा चार्ली–चार्ली हो जाता है।

प्रश्न. 1 लेखक के अनुसार चरमतम शूरवीर क्षणों में हमारी दशा किस प्रकार की हो सकती है?

2. चार्ली के टिली होने के क्या आशय है?

3. लेखक के अनुसार हमारा चेहरा चार्ली–चार्ली कब हो जाता है?

विषयवस्तु पर आधारित अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

प्रश्न. 1. वज्रादपि कठोराणि का अर्थ क्या है?

2. गाँधी व नेहरू का चैप्लिन से क्या संबंध है?

3. चार्ली सबसे ज्यादा स्वयं पर कब हँसता है?

4. संस्कृत नाटकों मे ंहास्य अभिनेता को क्या कहा जाता है?

5. चैप्लिन की जन्मशती के समय उनकी कौन–सी फिल्म के 75 वर्ष पूरे हुए थे?

लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3 अंक)

प्रश्न. 1. लेखक ने चार्ली का भारतीयकरण किसे कहा और क्यों? गाँधी और नेहरू ने भी उनका सान्निध्य क्यों चाहा?

2. जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया?

3. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि अभी चैप्लिन पर करीब 50 वर्षों तक काफी कुछ कहा जाएगा?

4. चार्ली के जीवन पर प्रभाव डालने वाली घटनाओं को लिखिए।

5. चार्ली हमारी वास्तविकता है, जबकि सुपरमैन स्वप्न आप इन दोनों में खुद को कहाँ पाते हैं?

CGBSE

नमक

रज़िया सज्जाद ज़हीर

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण के प्रश्न 6 अंक

1. उन सिख बीबी को देखकर सफ़िया हैरान रह गई थी, किस कदर वह उसकी माँ से मिलती थी। वहीं भारी भरकम जिस्म, छोटी–छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगाया करती थी। चेहरा जैसे कोई खुली हुई किताब। वैसा ही सफेद बारीक मलमल का दुपट्टा जैसा उसकी अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थी।

जब सफ़िया ने कई बार उनकी तरफ मुहब्बत से देखा तो उन्होंने भी उसके बारे में घर की बहू से पूछा। उन्हें बताया गया कि ये मुसलमान हैं। कल ही सुबह लाहौर जा रही है अपने भाइयों से मिलने, जिन्हें इन्होंने कई साल से नहीं देखा।

प्रश्न. 1. सफ़िया क्यों हैरान रह गई थी?

2. घर की बहू ने सिख किसे, किसके बारे में बताया ?

3. सफ़िया लाहौर क्यों जा रही है?

2. "जब उसका सामान कस्टम पर जाँच के लिए बाहर निकाला जाने लगा तो उसे एक झिरझिरी–सी आई और एकदम से उसने फैसला किया कि मुहब्बत का यह तोहफा चोरी से नहीं जाएगा, नमक कस्टम वालों को दिखाएगी वह। उसने जल्दी से पुड़िया निकाली और हैंड बैग में रख ली, जिसमें उसका पैसों का पर्स और पासपोर्ट आदि थे। जब सामान कस्टम से होकर रेल की तरफ चला तो वह एक कस्टम अफसर की तरफ बढ़ी । ज्यादातर मेजे खाली हो चुकी थी। एक दो पर इक्का–दुक्का सामान रखा था। वहीं एक साहब खड़े थे लंबा कद, दुबला पतला जिस्म, खिचड़ी बाल, आँखों पर ऐनक। वे कस्टम अफसर की वर्दी पहने तो थे मगर उन पर कुछ जँच नहीं रही थी। सफ़िया कुछ हिचकिचा कर बोली, मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ।

प्रश्न. 1. जब सफ़िया का सामान कस्टम पर जाँच के लिए बाहर निकाला जा रहा था तो उसे झिरझिरी सी क्यों हुई?

2. सफ़िया कस्टम अफसर की तरफ क्यों बढ़ी?

3. सफ़िया के हैंड बैग में क्या–क्या सामान रखे थे?

3. उन्होंने पुड़िया को धीरे से अपनी तरफ सरकाना शुरू किया। जब सफ़िया की बात खत्म हो गई तब उन्होंने पुड़िया को दोनों हाथों में उठाया, अच्छी तरह लपेटा और खुद सफ़िया के बैग में रख दिया। बैग सफ़िया को देते हुए बोले "मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुजर जाती है कि कानून हैरान रह जाता है।"

वह चलने लगी तो वे भी खड़े हो गए और कहने लगे, जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहिएगा और उन खातून को यह नमक देते वक्त मेरी तरफ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ्ता–रफ्ता ठीक हो जाएगा।

प्रश्न. 1. नमक की पुड़िया को सफ़िया के बैग में रखकर सफ़िया को देते समय कस्टम अधिकारी ने क्या कहा?

2. कस्टम अधिकारी ने सफ़िया के चलने के समय खड़े होकर उससे क्या कहा?

3. "लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ्ता–रफ्ता ठीक हो जाएगा।" यह कथन कस्टम अधिकारी की किस भावना को प्रदर्शित करता है?

विषयवस्तु पर आधारित प्रश्न –

अति लघु उत्तरीय — प्रत्येक 1 अंक

1. नज़रूल इस्लाम कौन थे?

2. कीनुओं की टोकरी की तह में क्या रखा गया है?

3. कस्टम अफसर कहाँ के रहने वाले हैं?

4. सिख बीबी किस प्रकार का दुपट्टा ओढ़ा करती थी?

लघु उत्तरीय प्रश्न — प्रत्येक 3 अंक

1. सफ़िया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से मना क्यों कर दिया?

2. नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफ़िया के मन में क्या द्वन्द्व था?

3. "लाहौर अभी उनका वतन है और देहली मेरा या मेरा वतन ढाका है" जैसे उदगार किस सामाजिक यथार्थ का संकेत करते हैं?

4. नमक कहानी में भारत व पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है, कैसे?

CGBSE

शिरीष के फूल

(हजारी प्रसाद द्विवेदी)

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण के प्रश्न 6 अंक

1. शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पंद्रह बीस दिन के लिए फूलता है, बसंत ऋतु के पलाश की भाँति। कबीरदास को इस तरह पंद्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड–के–खंखड– दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरीष। बसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।

प्रश्न. 1. आरग्वध व पलाश से शिरीष की तुलना क्यों नहीं की जा सकती?

2. शिरीष किसकी भाँति अजेयता का प्रचार करता है?

3. कबीरदास को क्या पसंद नहीं था?

2. फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब कुछ कोमल है। यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल पत्ते मिलकर धकिया कर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। बसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रूख नहीं पहचानते और जब तक नयी पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

प्रश्न 1. लेखक ने शिरीष के फूलों की तुलना किससे की है?

2. नेताओं की किस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है?

3. शिरीष फूल और फलों में क्या अंतर है?

3. शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं। पुराने भारत का रईस जिन मंगल जनक वृक्षों को अपनी वृक्ष वाटिका की चहारदीवारी के पास लगाया करता था, उनमें एक शिरीष भी है। अशोक, अरिष्ट, पुन्नाग और शिरीष के छायादार और घनमसृण हरीतिमा से परिवेष्टित वृक्ष वाटिका जरूर बड़ी मनोहर दिखती होगी। वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' में बताया है कि वाटिका के सघन छायादार वृक्षों की छाया में ही झूला (प्रेंरवा दोला) लगाया जाना चाहिए। यद्यपि पुराने कवि बकुल के पेड़ में ऐसी दोलाओं को लगा देखना चाहते थे, पर शिरीष भी क्या बुरा है। डाल इसकी अपेक्षाकृत कमजोर जरूर होती है, पर उसमें झूलने वालियों का वजन भी तो बहुत ज्यादा नहीं होता। कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वजन का एकदम खयाल नहीं करते।

प्रश्न. 1. प्राचीन भारत में वृक्षों का क्या महत्व था?

2. वात्स्यायन में कामसूत्र में क्या बताया है?

3. कवियों की किस बुरी आदत को बताया गया है?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न प्रत्येक 1 अंक

प्रश्न. 1. शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में कैसा माना गया है?

2. शिरीष के वृक्ष किस प्रकार के होते हैं?

3. अवधूत का क्या अभिप्राय है?

4. अनासक्त कवि की श्रेणी में किस आधुनिक कवि को रखते हैं?

लघुउत्तरीय प्रश्न प्रत्येक में 3 अंक

प्रश्न. 1. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

2. हृदय की कोमलता बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी–कभी जरूरी हो जाती है? शिरीष के फूल पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

3. कर्णाट–राज की प्रिया विज्जिका देवी ने किन्हें कवि माना है और क्यों?

4. द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट कीजिए।

5. लेखक के अनुसर शिरीष के फूल पाठ का क्या उ्ददेश्य है? स्पष्ट कीजिए ।

CGBSE

श्रम विभाजन और जाति प्रथा

गद्यांश पर आधारित अर्थ ग्रहण के प्रश्न 6 अंक

1. "जाति–प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धान्त के विपरीत जाति प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण जैसे माता पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार पहले से ही अर्थात गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

प्रश्न. 1. जाति–प्रथा का दूषित सिद्धान्त लिखिए।

2. सक्षम श्रमिक समाज का निर्माण किस प्रकार हो सकता है?

3. गद्यांश का शीर्षक व लेखक का नाम बताइये ।

2. मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए, जिसमें कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान–प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

प्रश्न. 1. भाईचारे का वास्तविक स्वरूप क्या है?

2. समाज में गतिशीलता लाने के लिए क्या सुझाव दिये हैं?

3. लेखक की दृष्टि में आदर्श समाज कैसा होना चाहिए?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक में एक अंक)

1. समता काल्पनिक जगत की वस्तु कैसे है?
2. दासता क्या है?
3. न्याय का तकाजा क्या है?
4. व्यवहार की एकमात्र कसौटी बताइये ।
5. किस प्रकार के लोग प्रतियोगिता में बाजी मार लेंगे।

लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक में तीन अंक)

1. जाति–प्रथा में लेखक ने क्या दोष देखा।
2. जाति–प्रथा में लेखक ने किन गंभीर दोषों का वर्णन किया है।
3. आदर्श समाज की तीन विशेषताएँ बताइये ।
4. डॉ. अम्बेडकर के जीवन का क्या उददेश्य था।
5. लेखक के समता संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।

क्या लिखूं

गद्यांश पर आधारित अर्थ ग्रहण के प्रश्न (6 अंक)

1. अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंधकार ए.जी. गार्डिनर का कथन है, कि लिखने की एक विशेष मानसिकता होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग सी उठती है, हृदय में कुछ स्फूर्ति सी आ जाती है । मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेश उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिंता नहीं रहती है। कोई भी विषय हो उसमें हम हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूंटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं है। इसी तरह मन के भाव ही यथार्थ वस्तु है, विषय नहीं।

प्रश्न. 1. गार्डिनर के अनुसार निबंध लेखन के लिए क्या आवश्यक है?

2. साहित्य रचना का मूल क्या है?

3. गद्यांश के पाठ का नाम तथा लेखक का नाम बताइये।

2. जो वृद्ध हो गये हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरूणावस्था से दूर हट आए हैं,उन्हें अपने अतीत काल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरूणों के लिए जैसे भविष्य उज्जवल होता है वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत और वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है। तरूण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं। तरूण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत के गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमानकाल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

प्रश्न. 1. वृद्धों और नवयुवकों की मानसिकता में क्या अंतर है?

2. प्राचीनता के मोह का मनुष्य परित्याग क्यों नहीं कर पाता?

3. समाज में विकास और गतिशीलता कैसे सकती है?

3. सच तो यह है कि ढोल की ध्वनि के साथ आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद, और प्रेम का संगीत ये तीनों मिलते हैं तभी उनकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु प्रतीत नहीं होती और दूरस्थ लोगों के लिये मधुर बन जाती है। तरूणों के लिए रोग या मृत्यु दोनों ही सुखद है । क्योंकि दोनों मे प्रेम की मधुरता है, पर संसार में प्रविष्ट होते ही प्रेम का यह कल्पित संसार न जाने कहाँ विलीन हो जाता है। तब उन्हें ढोल की कर्कशता मालूम होती है।

प्रश्न. 1. ढोल की ध्वनि सुनने पर श्रोताओं को क्या अनुभव होता है?

2. युवकों को वास्तविकता का ज्ञान कैसे होता है?

3. वास्तविकता की कटुता भी कब मधुर लगती है?

विषयवस्तु पर आधारित प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न — प्रत्येक 1 अंक

प्रश्न 1. ए.जी. गार्डिनर कौन है?

2. सेक्सपियर ने अपने नाटक का नाम क्या रखा?

3. अंग्रेजी के निबंधकारों की दूसरी पीढ़ी के साहित्यकार कौन है?

4. तरूण भविष्य को कहाँ लाना चाहते हैं?

5. वृद्ध अतीत को खींचकर कहाँ देखना चाहते हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न — प्रत्येक 3 अंक

प्रश्न 1. असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं, लेखक के ऐसा कहने का क्या आशय है?

2. "दूर के ढोल सुहावने होते हैं क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती, परन्तु उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु प्रतीत नहीं होती।" क्यों?

3. "तरूणों के लिए जैसे भविष्य उज्जवल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत", लेखक द्वारा ऐसा कहने के पीछे क्या आशय है?

4. मानव समाज में निरंतर सुधार प्रक्रिया क्यों जारी रहती है?

CGBSE

वितान

1. सिल्वर वैडिंग

प्रश्न 1. सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर बदलते भारतीय जीवन मूल्यो का वर्णन कीजिए। क्या बदलाव उचित है?

2. ''घर में पार्टी के दिन पूजा समय को बढ़ाना'', यशोधर बाबू के जीवन के द्वंद्व का चित्रण कीजिए?

3 यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की भूमिका रही। आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा और कैसे?

4. सिल्वर वैडिंग कहानी में, अपनी पसंद के पात्र की चरित्रगत विशेषताएँ बताइये।

5. सिल्वर वैडिंग के आधार पर पीढ़ियों के अन्तराल के कारण विचारों के अंतर को कैसे संतुलित किया जा सकता है। स्पष्ट कीजिए।

6. सिल्वर वैडिंग के आधार पर पारिवारिक संबंधों से ज्यादा धन की महत्व है? स्पष्ट कीजिए।

7. वह खुशहाली भी क्या जो अपनों में परायापन पैदा करे यशोधर बाबू के विचारों को लिखिए।

8. वाई.डी. पंत के आदर्श कौन थे और क्यों?

2. जूझ

प्रश्न. 1. ग्रामीण जीवन शैली का चित्रण जूझ कहानी के आधार पर कीजिए।

2. आनंदा का आत्मविश्वास किस तरह बढ़ता गया वर्णन कीजिए।

3. लेखक कविता–लेखन के लिए किन किन साधनों का उपयोग करता है?

4. आनंदा का खेती पर मन न लगना, विद्यालय जाने की तड़प को जूझ कहानी के आधार पर वर्णन कीजिए।

5. लेखक की पढ़ाई के लिए माँ के द्वारा दिया गये योगदान को बताइये ?

6. लेखक के मन में कविता लिखने का आत्मविश्वास कैसे पैदा हुआ?

7. प्रतिकूल परिस्थिति में संघर्ष करने की प्रेरणा जूझ कहानी देती है? उदाहरण सहित बताइये?

8. जूझ कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

3. अतीत के दबे पाँव

1. सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी पुरातात्विक चिन्हों के आधार पर बताइये?
2. खेती का उन्नत रूप व पशु पालक सभ्यता के रूप में सिंधु सभ्यता के अवशेषों का वर्णन कीजिए।
3. टूटे फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ–साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का दस्तावेज होते हैं भावार्थ स्पष्ट कीजिए?
4. क्या हम सिंधु घाटीकी सभ्यता को जल संस्कृति कह सकते हैं। लेखक के पक्ष में या विपक्ष में अपना तर्क दे?
5. खुदाई से प्राप्त अवशेषों को सूचीबद्ध कीजिए ।
6. "सिन्धु सभ्यता साधन संपन्न थी, पर उसमें आडंबर नहीं था।" स्पष्ट कीजिए।
7. ''अतीत के दबे पाँव'' के आधार पर चार दृश्यों का चित्रण कीजिए।
8. ''अतित में दबे पाँव'' पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

4. डायरी के पन्ने

1. ऐन ने अपनी डायरी किट्टी को संबोधित चिट्ठी की शक्ल में लिखने की जरूरत क्यों महसूस की होगी?
2. युद्ध में घायल हुए सैनिक गर्व का अनुभव करते हैं डायरी के पन्ने के आधार पर वर्णन कीजिए।
3. आपके विचार में क्या ऐन की डायरी ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है? स्पष्ट कीजिए।
4. डायरी ऐन की भावात्मक उथल पुथल का दस्तावेज है स्पष्ट कीजिए।
5. महिलाओं की स्थिति में हो रहे बदलाव को डायरी के पन्ने के आधार पर बताइये ।
6. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शहरों की परिस्थितियों का अनुमान लगाकर वर्णन कीजिए।
7. अज्ञातवास के समय फ्रैंक तथा वान परिवार क्या क्या करते थे?
8. ऐन के डायरी लिखने के कारणों को लिखिए ।

ठ
ञ
आ
अ
ठ
ई
ख
अं
र
ञ
आ
अ
फ
ब
औ
क
ऊ
ल
प
स
ठ
ञ
आ
अ